

पद ११७

(राग: वसंत - ताल: एक्का)

नेति नेति नाहीं जीवा भवबंध। आत्मा प्रचंड, उदंड, अखंड
दंडायमान। विमल, विपुल, अचल, सकल निगम (वेद) सिंह
गर्जनाही। सहज मुक्त जीव वृंद॥ध्रु॥ अस्ति भाति ब्रह्मरूप।
दृश्य लोटी अंध कूप। गुरुवचन ज्ञान दीप। ऐक कानि मूढ मंद॥१॥
श्रुति चिन्मार्ताण्ड किरण। अहमस्मि आत्मा स्फुरण। वेद धिक्कार
प्रवीण। दत्त सदानंद कंद॥२॥